हिन्दी प्रेस क्लब

BOSM 2023

दिवस 1 | अंक 1

स्पर्धा

संपादकीय

ज़िंदगी कितनी नाज़ुक सी है। एक पल की चूक से सब कुछ बदल जाता है। कुछ ऐसा ही महसूस किया होगा 8 साल के देवेन्द्र झाझरिया ने जब एक. पेड़ पर चड़ते हुए उन्हें बिजली का झटका लग गया। चिकित्सा सेवा तो उन्हें प्राप्त हुई परंतु उनके बाएं हाथ का विच्छेद करना पड़ा। पर देखा जाए यह. भी तो ज़िंदगी की ख़ासियत है कि वह कभी थमती नही, नए मौके देती. रहती है, बस आपको उन मौकों को भूनना आना चाहिए जैसे कि देवेन्द्र. झाझरिया ने किया। शायद ज़िंदगी का यह पहलु, खेलों से ज़्यादा कोई. बहतर प्रतीकत्व नहीं करता। जैसे हर मैच में उतार चड़ाव आते हैं, हर. खिलाड़ी के जीवन में भी उतार चड़ाव आते हैं। पर हर खेल उन्हें फिर से. मौका देता है शिख़र पर चड़ने का। इसलिए ही तो हर विद्यालय और कॉलेज एक खेल महोत्सव का आयोजन करता है।

हमारे प्यारे बिट्स का भी खेल महोत्सव इस साल फिर नए उमंग और जोश के साथ हमारे बीच लौटा है। अगले कुछ दिन अनेक खेलों के अनेक मैच. होंगे, अनेक खिलाड़ियों की दहाड़ हर मैच में गूंजेगी, अनेक नारों की गूँज. सुनाई देगीं और अनेक खिलाड़ी विजेताओं मे तब्दील होंगे। पर ज़िंदगी क्या इतनी सीधी-सादी है? हमारे प्यारे प्रशासन ने BOSM से पहले ही सारे. विद्यार्थियों को ज़ोर का झटका दे दिया था यह ईमेल भेजकर कि बोस्म के. दौरान परीक्षाएं चालू रहेगीं। साथ ही पिछले कुछ फेस्ट से जो फेस्ट के दौरान निर्माण कार्य की प्रथा चल रही है, वह इस बार भी जारी रही हालांकि इस. बार उनका निशाना रोड नही बल्कि एफ डी 3 है। पर फेस्ट की सबसे बड़ी. विडंबना तो यह है कि मुख्य अतिथि भाला फेंक के विश्व विजेता हैं और. हमारे BOSM मे भाला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन ही नही हो रहा है।

मैं फेस्ट की छोटी-छोटी कमियाँ तो जितनी भी निकाल दूँ, अंत में बात तो. यह ही है कि फेस्ट का अनोखा माहौल, दोस्तों के साथ यूँ ही घूमना, अलग-अलग खेलों का आनंद उठाना और अलग-अलग प्रोफ शो में झूमना हमारी. यादों के कोनों मे हमेशा रहेगा। यह सारी भावनाएँ सबसे प्रमुख तो 23 बैच. के छात्रों मे रहेगी क्यूंकि यह उनका पहला फेस्ट है। 2 साल की कड़ी मेहनत के दौरान शायद उन्होंने इन्हीं कॉलेज दिनों के सपने देखे होंगे।

इन सभी हलचलों के बीच बी०एच०पी० आपके सामने पेश करता है. हमारा फेस्ट का पहला अंक। यह अंक शायद थोड़ा प्रेरणादायक ज़्यादा हो. सकता है। आखिर क्यूँ नहीं होगा? इस अंक मे देवेन्द्र झाझरिया का. साक्षात्कार एवं NSS के इवेंट जुनून पर लेख जोक है। इतना ही नहीं क्या. आप जानना नहीं चाहते कि बाहर से आए खिलाड़ियों का बिट्स पर क्या. विचार है? पर सोच की सीमा को रोकना क्यों? क्या होगा अगर सुखा. पिलानी जहाँ हमें टेंकर से पानी लाना पड़ता हैं वहाँ बाड़ आ जाए?

बी० एच० पी० का हर अंक कुछ ठहाकेदार कार्टून्स के बिना तो पूर्ण होगा ही.नहीं। इसलिए जाने, क्या थे उद्घाटन के कुछ हास्यमय अंग और लोगों की.पहले दिन की तरह प्रतिक्रियाँ।

बिना सारे क्लब, डिपार्टमेंट, खिलाड़ी, कमिटी आदि की महीनों की मेहनत. की सरहाना करे बिना तो मैं यह संपादकीय ख़त्म नहीं कर सकता। सब के. सहयोग से ही तो इतने बड़े स्तर का फेस्ट सफ़ल होता हैं। आखिर में मैं सब. का 36वें BOSM में स्वागत करता हूँ।

अनुक्रमणिका

- दहाड़ की शुरुआत
- मुख्य अतिथि से साक्षात्कार
- जब पिलानी डूब गया...
- है जुनून
- 4-0 की बात
- बातचीत

दहाड़ की शुरुआत

दिनांक 22 सितम्बर को BITS के स्पोर्ट्स फेस्ट BOSM (बिट्स ओपन स्पोर्ट्स मीट) का शान्दार उद्घाटन हुआ। इस बार के मुख्य अतिथि दो बार के पैरालाम्पिक्स स्वर्ण पदक विजेता – श्री देवेन्द्र झाझडिया हैं जिन्हें अन्य कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी नवाज़ा गया है। BOSM जिसका इंतज़ार बिट्स के. छात्र बड़ी बेसब्री से कर रहे थे, के आगाज़ ने सभी छात्रों को उल्लास और उमंग से भर दिया। कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ मुख्य ऑडिटोरियम में हुआ। BITS के छात्रों की अपेक्षाओं के विपरीत इस बार उद्घाटन.समारोह समय पर आरंभ हुआ, बैरहाल इस समारोह का इतिहास रहा है कि वह हमेशा निर्धारित समय से देरी से ही शुरू होता है।

जैसा कि बिट्स के हर फेस्ट में होता है, सबसे पहले सभी CoSSAc - जिनमे सभी डिपार्टमेंट के समन्यवयक, सह खेल सचिव और खेल सचिव भी शामिल हैं, को एक-एक कर मंच पर आमंत्रित किया और फिर सिलसिला शुरू हुआ सभी के हास्यास्पद परिचय का, एक के बाद एक मंच मौजूद सभी CoSSAc पर तंज कसे गए जिनका सबने जमकर मज़ा लिया। उसके बाद मुख्य अतिथि और डायरेक्टर प्रो. सुधीर कुमार बरई ने दीप प्रज्वलित किये। डायरेक्टर सर ने बहुत ही मज़ेदार ढंग से स्पीच देते हुए जिंदगी की खेल से तुलना की जिसमे उन्होंने कहा कि जिंदगी के खेल में कोई खिलाडी बनकर खेलता है तो कोई खिलौना मात्र बनकर रह जाता है। मुख्य अतिथि महोदय ने भी डाइरेक्टर सर के कथन को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हो सकता है किसी के लिए ज़िन्दगी खेल हो परंतु उनके लिए तो उनका खेल ही उनकी ज़िन्दगी है।

इसी श्रंखला में दूसरा संगीतमय कार्यक्रम गुरुकुल के मधुरमय गीतों के साथ शुरू हुआ। प्रस्तुति में सम्मिलित तीनो गीतों ने तो मानो समां ही बाँध दिया। हर बार की तरह इस बार भी गुरुकुल सब की उम्मीदों पर खरा उतरा। इस प्रस्तुति में 23 तारीख को होने वाले गुरुकुल के कार्यक्रम, “ध्वनि” की थोड़ी सी झलक भी देखने को मिली।

उसके पश्चात कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए HDC(हिन्दी ड्रामा क्लब) के प्रोग्राम ट्रेलर अमलगम 2.0 को भी दिखाया गया जिसकी हॉरर अवधारणा छात्रों के मध्य चर्चा का विषय बनी हुई है। बीच में कलावंश का रैप परफोर्मेंस भी हुआ। साथ में स्पोंसर्स जर्क एनर्जी ड्रिंक और थ्री सिस्टर्स नॉन अल्कोहोलिक बीर के एड्स भी दिखाए गए थे। इसी दौरान कोडिंग क्लब द्वारा बनाया BOSM का ट्रेलर भी प्रस्तुत किया गया। और इस फेस्ट के थीम – “Roar of Resilience” को भी रिलीज़ किया गया। BOSM 2023 का ऐप्प, BOSM जिसमे सभी मर्च और आने वाले इवेंट्स की सूचनाएं भी मिलेंगी को छात्रों के समक्ष पेश किया गया। DVM द्वारा बनाये गए बिट्स के वार्षिकोत्सव OASIS के थीम – “Grimoires Galore” को भी अंततः आज रिलीज़ कर दिया गया। जिसमें OASIS की झलक देखने को मिली। सभागार में होने वाले कार्यक्रम की समाप्ति के बाद सभी लोग GymG आए जहां बिरला बालिका विद्यापीठ की बालिकायों ने बैंड प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों से खासी सराहना मिली। उद्घाटन समारोह को अपना अंतिम रूप देते हुए मुख्य अतिथि महोदय ने मशाल प्रज्ज्वलित कर BOSM का आधिकारिक आगाज़ किया।

मुख्य अतिथि से साक्षात्कार

विश्वपटल पर भारत का नाम रौशन करने वाले, कड़ी मेहनत और अनुशासन का पर्याय- BOSM 2023 में मुख्य अतिथि पद्म भूषण देवेंद्र झाझरिया , जिन्होंने पैरा एथलेटिक्स में भाला फेंक कर. भारत का नाम रौशन किया है, उन्होंने BOSM हिंदी प्रेस से वार्ता करते हुए अपने विचार साझा. किये l

Q 1. कृपया खेल जगत में अपनी यात्रा के बारे में थोड़ी जानकारी दें और बताएं कि आपने जैवलिन फेंकना कैसे प्रारंभ किया?

ANS. मैं दसवीं कक्षा में गवर्नमेंट कॉलेज में पढ़ता था, जिसमे स्विमिंग, एथलेटिक्स सीखने और खेलने की कोई सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी, सिर्फ कबड्डी, कुश्ती, और खो खो जैसे खेल ही खेले जाते थे l परंतु. मुझे एथलेटिक्स में काफी रुचि थीl मैंने शॉटपुट फेंकने की कोशिश की पर वो मुझे भारी लगा l उसके बाद मैंने जैवलिन फेंकने का प्रयास किया और मुझे काफी अच्छा लगा l बस उसके बाद मैंने भाला फेंकना शुरू किया l मेरा सफर आसान नहीं था, कई लोगों ने मुझसे कहा कि मैं नहीं कर पाऊंगा क्योंकि मैं अलग रूप से सक्षम था l पर सब कुछ तब बदल गया जब मैंने 2002 में आँठवे FESPIC गेम्स में स्वर्ण पदक जीता l मेरे लिए भारत के लिए खेलना ही ज़िंदगी हैl

Q 2. आपकी उपलब्धियों से भारतीय पैरा-खेलों पर क्या प्रभाव पड़ा ? आप देश में पैरा - एथलेटिक्स के विकास और भविष्य को कैसे देखते हैं ?

ANS. भारत की सरकार कई सालों से पैरा एथलेटिक्स पर खर्चा नहीं कर रही थी l सुविधाएँ न मिलने के कारण. एक पदक जीतना भी बहुत मुश्किल था l किन्तु मेरे स्वर्ण पदक जीतने के बाद भारत सरकार पैरा. एथलेटिक्स पर. भरोसा करके हमें सुविधाएँ प्रदान करने लगी, जिसका प्रभाव साफ़ है l हमने बीजिंग के ओलिम्पिक्स में भारत को. कोई पदक नहीं मिला, लंदन में एक मिला, एथेंस में एक स्वर्ण पदक मिला, रियो. में चार मिले परंतु बेहतर. सुविधाएँ उपलब्ध होने के तुरंत बाद टोक्यो में हमने उन्नीस पदक जीते l ऐसे ही अगर भारत हमारा साथ देता. रहेगा तो मैं यकीन से बोल सकता हूँ कि हमें आसानी से तीस पदक मिल जायेंगे जिससे कि भारत विश्व के शीर्ष बीस देशों में जुड़ जाएगा l

Q 3. अनेक युवा खिलाड़ी आपको एक आदर्श के रूप में देखते हैं। उन खिलाड़ियों को अपने अपने खेलों में उत्कृष्ट होने के लिए आप क्या सुझाव देंगे?

ANS. "ये नहीं तो, कुछ नहीं है l" ऐसी सोच के साथ कुछ भी हासिल करना मुश्किल है l आज की युवा पीढ़ी को. यह याद रखना चाहिए कि खोने के लिए कुछ नहीं है, पर पाने के लिए सब कुछ है l अगर हमारी कोई इच्छा पूरी. नहीं हो रही है, इसका यही मतलब है कि हमारे नसीब में कुछ और बड़ा लिखा है l बस सेहत और खाने पीने पर. ध्यान देना चाहिए, और प्रशिक्षण करते रहना चाहिए l दबाव और नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए l और कभी. भी. घमंडी नहीं बनना चाहिए, क्योंकि घमंड एक ऐसी बीमारी है जो इंसान को खत्म कर देती हैl

Q. 4 जब आपने जैवलिन फेंकना शुरू किया, तो आपके परिवार के उस विषय पर क्या विचार थे ? आप अपनी सफलताओं का श्रेय किन लोगों को देना चाहंगे ?

ANS. मैं इसका सबसे ज्यादा श्रेय अपनी माँ को देना चाहता हूँ, क्योंकि उस समय सब अपने बच्चों को. डॉक्टर या इंजीनियर ही बनाना चाहते थे, पर मेरे परिवार ने और विशेष रूप से मेरी माँ ने मुझपर कोई. दबाव नहीं डाला था। आज जब मैं उन्हें पूछता हूँ कि उन्होंने मुझे क्यों नहीं टोका, तो वो कहती है कि वो. यही चाहती थी कि में ज़िंदगी में कुछ ऐसा करूँ जिससे मैं खुश रहूँ, और उन्हें पता था कि स्पोर्ट्स मेरे. लिए सही हैं।

Q. 5 आज से कुछ साल पहले तक भारत में खिलाड़ियों को समाज का समर्थन प्राप्त नहीं था । क्या आपको लगता है कि भारतीय जनता का खेलों के प्रति रवैय्या सुधरा है ?

ANS. बिल्कुल,काफ़ी कुछ बदल गया है। हमारे समय में क्रीड़ा स्थल का होना जरूरी नहीं माना जाता. था। तब सिर्फ़ गणित के अध्यापक ज़रूरी थे। पर अब क्रीड़ा स्थल की अहमता काफ़ी हद तक बड़ चुकी है। वही नहीं खेल के प्रति लोगों की सोच भी बदल रही है।

Q. 6 कई कठिनाइयों के बावजूद आपने जो हासिल किया है वह अकल्पनीय है । BITS में कई सुविधाएँ होने के बावजूद, पढ़ाई का दबाव बहुत ज़्यादा है। आप उनको खेल में अपनी रुचि पर. काम करने के लिए कैसे प्रोत्साहित करना चाहेंगे?

ANS. ऐसा नहीं है कि डॉक्टर या इंजीनियर खेल से दूर रहते हैं। ऐसे कई डॉक्टर और इंजीनियर हैं. जिन्होंने ओलिम्पिक्स में पदक जीते हैं। एक जमैका का खिलाड़ी था, असाफा पॉवेल, जो कि इंजीनियर. था, परन्तु उसने पैरा-एथलेटिक्स में कई कीर्तिमान स्थापित किए। मुझे लगता है कि पढ़ाई का उतना दबाव नहीं होता है। बस हर रोज़ अगर पैंतालीस मिनट अभ्यास करे, खाने-पीने का ध्यान रखे और. आठ. घंटे की नींद मिल जाए तो तीन से चार साल में खेल में सुधार दिख जायेगा। अनुशासन के बाद ही खेल में बदलाव नज़र आता है।

Q 7. BOSM 2023 के मुख्य अतिथि के रूप में दर्शकों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

ANS. पहले मैं छात्रों को अभिनंदन और शाबाशी देना चाहूँगा इतना बढ़िया आयोजन अपने बलबूते पर करवाने के लिए। मुझे सच में लगा था कि किसी संस्था ने यह आयोजित किया है, पर यहा आने के बाद मुझे पता चला कि यह सब BITS के छात्रों ने मिलकर किया है। और जो खिलाड़ी हैं, मैं उन्हें शुभकामनाएँ देना चाहूँगा और उन्हें याद दिलाना चाहूँगा कि खेल को खेल के भाव से ही खेले। हार-जीत खेल के सिर्फ़ दो पहलू होते हैं।

जब पिलानी डूब गया...

पिलानी, वो जगह जो जल से ज़्यादा परिचित नहीं रहती है। BITS के जीवन की तरह यहाँ का मौसम भी. अनअपेक्षित रंग दिखाता है। इन अनिश्चतताओं के बावजूद भी BOSM पूरे उल्लास से प्रारंभ हुआ। विभिन्न. कॉलेजो, खेलों लगभग 1200 खिलाडी इस फेस्ट में भाग लेने को आये। BITS के बच्चे सुबह अपनी नींद. छोड़ कर टेस्ट देते तो शाम को अपने सपनो के लिए मेहनत करते। खेलों के दौरान कई बार हल्की-हल्की. बारिश दिखी लेकिन मुकाबले निर्विघ्न तरीके से पूरे हुए। फेस्ट के अंत में देश के माननीय उपराष्ट्रपति भी. पधारने वाले थे जिनकी सुरक्षा के लिए CRPF के जवान आ चुके थे और ऑडिटोरियम को बंद रखा गया था। इस ही सिलसिले में BOSM संपन्न हुआ, कुछ खेले, कुछ जीते तो कुछ बस झूमे लेकिन अपने मन में एक. यादगार अनुभव ले कर बैठे थे। GymG में लगा हुआ मेला अब गायब होने को था। बाहर से आये हुए लोग. प्रस्थान कि तैयारी कर चूके थे, उपराष्ट्रपति जी भी पिलानी आ चुके थे और रास्ते में था कुदरत का एक तौफा। 27 की सुबह से एक ऐसी बारिश हुई जिसने आगे होए वाले घटनाक्रम को पूरी तरह से बदल दिया। पिलनी से. जाने वाली एकलौती सड़क भी इस वजह से बंद हो चूकी थी। यहाँ से जाने का एक मुख्य साधन बस ही थी. जिसे प्रशासन ने बंद करा दिया था। जो जहां था वो वही रह गया और उस ही चिंता में डूब गया कि आगे क्या होगा। बाड़ के जाने के आसार नहीं दिख रहे थे, मौसम विभाग भी कोई निष्कर्ष देने से हाथ खड़े कर चुके थे। BITS के परिसर में अब थे बिट्सियन, 1200 मेहमान, उपराष्ट्रपति और बहुत सारा पानी जिनमे से कोई एक भी कही और नहीं जाने वाला था। उन्हें जैसे तैसे यही उन्ही वही रहना पड़ेगा। कॉमन रूम के गद्दे नाव की तरह तैर रहे थे।

कैम्पस के लोगों के लिए ही रहना ही एक बड़ी चुनौती बन चुका था। ऐसी परिस्थिति की वजह से लोग एक. दूसरे के रूम में रहते थे। नीचे रहने वाले मेहमानों के लिए अब कोई जगह नहीं बची थी लेकिन हॉस्टल के कई. छात्रों `ने उन्हें अपने कमरों में ठहराया। दो बिस्तरों पर अब तीन लोग सो रहे थे, हॉस्टल के छात्रों के साथ ही वे. अपना जीवन यापन कर रहे थे। मेस के आधे कर्मचारी केम्पस् के बाहर रहते थे जिस वजह से पर्याप्त भोजन. भी नहीं बन पा रहा था। इस परीक्षा में बच्चों ने ही खुदकी सहायता की और खाना बनाने में जुट गए। इंजीनियरिंग के छात्र अपनी कला खाना बनाने में लगा रहे थे। अगले एक दो दिन तक सब सही चला, बाहर से. आये हुए लोग BITS Pilani चिन्हित हुए कपड़ो में दिख रहे थे। कॉलेज प्रशासन ने काम दरों पर खिलाडियों. के लिए व्यवस्था करवाई लेकिन बाहरी सहायता ना होने की वजह से ज़्यादा कुछ करना मुश्किल था। पास ही. के गेस्ट हॉउस में ठहरे उपराष्ट्रपति सुरक्षित थे, उनके लिए भी पर्याप्त व्यवस्था थी लेकिन उन्हें दूसरे बच्चो कि. ज़्यादा चिंता थी। किसी बाहरी आवागमन के ना होने कि वजह से धीरे धीरे राशन खत्म हो रहा था और इसका. उपाय ढूँढना ज़रूरी था।

कुछ ही घंटों में, उपराष्ट्रपति जी के सुझाव पर सरकार ने मदद करने का निर्णय किया। 2-3 टन राशन से भरा. हुआ वायु सेना का एक हेलिकोप्टर रोटुंडा के गोलाकार फर्श पर उतरा। एक हफ्ते में ही सब समान हुआ और. रह गयीं एक कहानी जिसमे कई अलग-अलग स्तरों के लोगों ने मानवता का परम धर्म निभाते हुए एक दूसरे. का सहारा बने।

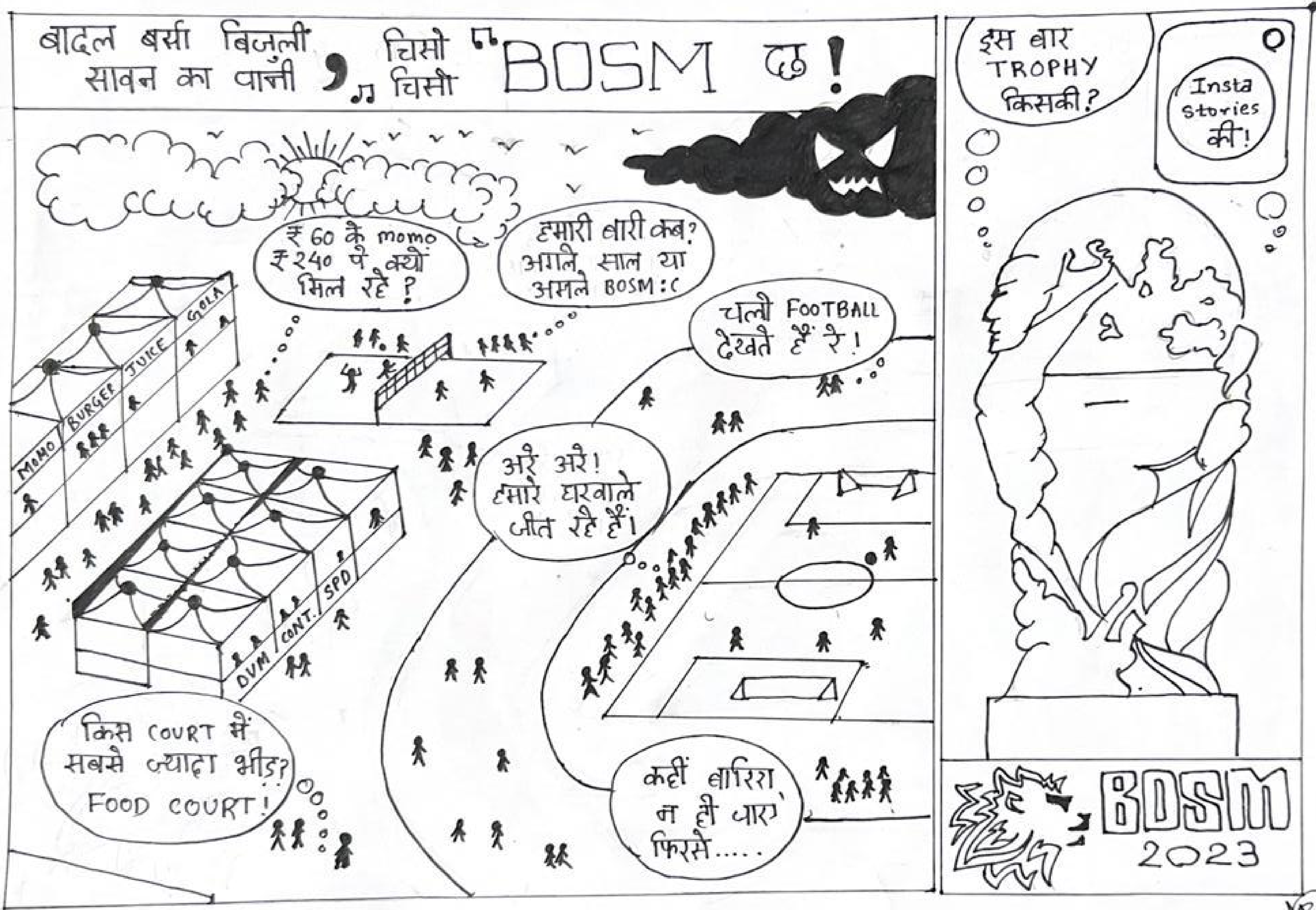
बादल बर्सा बिजली सावन का पानी, चिसो चिसो "BOSM छ !
₹60 के momo ₹240 पे क्यों मिल रहे ?
हमारी बारी कब? अगले साल या अगले BOSM :(
चलो FOOTBALL देखते हैं रे !
अरे अरे! हमारे घरवाले जीत रहे हैं।
MOMO
BURGER
JUICE
GOLA
DVM
CONT.
SPD
किस COURT में सबसे ज्यादा भीड़? FOOD COURT!
कहीं बारिश, न ही जाए फिरसे.....
इस बार TROPHY किसकी?
Insta stories की!
BOSM
2023

है जुनून

बिट्स पिलानी के क्लब राष्ट्रीय सेवा योजना NSS कि दृष्टि भी इसी सिद्धांत पर आधारित है| विकलांगता जीवन का अंत नहीं है| एक विकलांग व्यक्ति वह हर कार्य कर सकता है जो एक आम व्यक्ति करता है| इसी सोच के अंतर्गत सं 2010 में NSS ने जूनून के प्रथम संस्करण का आयोजन किया था|

COVID प्रभावित वर्षो के अलावा हर वर्ष जूनून का आयोजन किया गया|

2023 में जूनून का 11वा संस्करण आयोजित किया गया| यह कार्यक्रम कुल 2 दिन तक चला| इस कार्यक्रम के हेतु दिल्ली, जैपुर और चंडीगढ़ जैसे शहरों से विशेष आवश्यकता वाले विद्यालयों छात्रों को जुनून का हिस्सा बनने का आमंत्रण भेजा | यात्रा व्यय के अलावा सभी छात्रों और उनके शिक्षकों अथवा अभिभावकों का हर खर्चा NSS द्वारा प्रबंधित किया गया|

2023 में NSS द्वारा जूनून 11वा संस्करण आयोजित किया गया| यह कार्यक्रम कुल 2 दिन तक चला| इस कार्यक्रम के हेतु दिल्ली, जैपुर और चंडीगढ़ जैसे शहरों से विशेष आवश्यकता वाले विद्यालयों के छात्रों को जुनून का हिस्सा बनने का आमंत्रण भेजा | यात्रा व्यय के अलावा सभी छात्रों और उनके शिक्षकों अथवा अभिभावकों का हर खर्चा NSS द्वारा प्रबंधित किया गया| निकटवर्ती न जी औ के द्वारा भी विकलांग छात्रों के लिए काफी सहायता प्रदान की गयी | इसका एक उद्धरण है एक NGO जिससे जुडी हुई दो फ्रेंच महिलाओ ने गंभीर संवादहीनता के बावजूद 2 din के पूरे कार्यक्रम में आये विकलांग छात्रों की सहायता की|

जुनून के पहले दिन का आयोजन SAC में किया गया| कार्यक्रम में आये सभी विकलांग छात्रों, उनके अभिभावक, शिक्षकों अथवा उनके अभीक्षकों का स्वागत किया गया | इसके पश्चात सैक में सभी विकलांग विद्यार्थियों के लिए मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया गया | इन मनोरंजाक गतिविधिओं में चित्रकारी, क्ले मोल्डिंग व् आर्ट एंड क्राफ्ट जैसी गतिविधियां शामिल थी| वह सब लोग जो बार विकलांग छात्रों से पहली बात रूबरू हुए थे, वह इनकी विकलांगता के विरूद्ध इनकि इनकी रचनात्मकता को देखकर दंग थे |

भले ही उनकी विकलांगता दिमागी हो या शारीरिक, हर छात्र ने सारी गतिविधियों में पूर्ण शिद्दत से शामिल हुए | विकलांग होने बावजूद उन सब की चक्षु की चमक और चेहरे का तेज देखकर सैक में मौजूद हर व्यक्ति के मन मैं विकलांगता का अर्थ बदल रहा था |

जुनून के दुसरे व् आखरी दिन सभी विकलांग विद्यार्थिओं के लिए ट्रैक एंड फील्ड के खेल आयोजित किये गए | इस कार्यक्रम में शामिल सभी विकलांग छात्रों प्रोत्साहन के लिए पद्मश्री सम्मानित पैरालिम्पिक टेंनिस खिलाडी माननीय हैरी बोनिफेस प्रभु और अर्जुन पुरुस्कार से सम्मानित श्रीमती मालाठी कृष्णामूर्ति हॉलला को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया| सभी छात्रों का खेलो के प्रति उत्साह देखर सभी दर्शकगण अचंबित थे| सभी अपनी आँखों से विकलांगता नामक दिवार को टूटते हुए देख रहे थे |

जुनून के दुसरे व् आखरी दिन सभी विकलांग विद्यार्थिओं के लिए ट्रैक एंड फील्ड के खेल आयोजित किये गए | इस कार्यक्रम में शामिल सभी विकलांग छात्रों प्रोत्साहन के लिए पद्मश्री सम्मानित पैरालिम्पिक टेंनिस खिलाडी माननीय हैरी बोनिफेस प्रभु और अर्जुन पुरुस्कार से सम्मानित श्रीमती मालाठी कृष्णामूर्ति हॉलला को मुख्या अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया| सभी छात्रों का खेलो के प्रति उत्साह देखर सभी दर्शकगण अचंबित थे| सभी अपनी आँखों से विकलांगता नामक दिवार को टूटते हुए देख रहे थे |

दिन की समाप्ति के पश्चात सभी छात्रों के लिए मेंन ऑडिटोरियम में एक जुनून नाइट का आयोजन किया गया| इस नाइट में पिलानी कैंपस के विभिन्न संगठन जैसे पंजाब कल्चरल संघठन के द्वारा एक शानदार डांस प्रदर्शन भी किया गया| इसके अलावा काव्य सम्मलेन का भी आयोजन किया गया| सभी विकलांग छात्रों को नाइट के सभी कार्यक्रमों में हिस्सा लेने का भी मौका दिया गया | पुनः सभी छात्रों ने अपनी विकलांगताओं की ज़ंजीरो को तोड़ सभी को यह दिखाया की विकलांगता जिंदगी का अंत नहीं है बल्कि आम व्यक्तिओ को प्रेरित करने का एक स्त्रोत है| इसी नाइट के साथ जुनून का 11वां संस्करण भी सफलता पूर्वर्क समाप्त हुआ|

4-0 की बात

BOSM के पहले दिन का आगाज़ हुआ एक अनोखे उत्साह के साथ और इसी जश्न में डूबी शाम के साथ हमें देखने को मिला एक काफी रोमांचक फुटबॉल मैच टीम BITS और MANAV RACHNA के बीच |.

मैच की बाज़ी अपने नाम करने के पुरज़ोर प्रयास में, टीम MANAS ने मैच का पहला गोल करने की ओर कदम बढ़ाए तथा बॉल को विरोधी टीम के गोल पोस्ट में पहुँचाने में कामयाब हो गए लेकिन Offside होने के कारण उसे अमान्य. ठहरा दिया गया | पहले ही हाफ में माहौल की गर्मी और पसीने से प्रज्ज्वलित जोश के नतीजन आखिर टीम BITS के खिलाड़ी कुशाग्र ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए volley मारकर पहला गोल अपनी टीम के नाम किया समय के साथ मैच और भी दिलचस्प होता गया , तभी अचानक से टीम MANAV के एक खिलाड़ी के हैंड टच होने के कारण टीम बिट्स के हिस्से में एक पेनल्टी आ गई | जैसे ही टीम BITS इस पेनाल्टी को गोल में. तब्दील करने में सफल हुई, वैसे ही समर्थकों में उमंग की लहर दौड़ उठी ! पहले हाफ के समापन में 2-0 स्कोर के. साथ. बाज़ी उन्ही के नाम रही|

दूसरे हाफ़ में अपना पलड़ा भारी होने के बावजूद टीम BITS विरोधी टीम को करारा जवाब देते रही, साथ ही टीम MANAV ने भी अपने मनोबल पर किसी तरह का प्रभाव नहीं पड़ने दिया| दोनों ही टीम एक दूसरे को कांटे की टक्कर देते हुए मैच को एक काफी रोमांचक स्तर पर ले गए| टीम BITS ने अपनी कुशलता का नमूना पेश करते हुए लगातार विरोधी टीम के खिलाफ दो गोल दाग दिए और बाज़ी अंत में टीम BITS के ही नाम रही, वो भी 4-0 के शानदार स्कोर के साथ !

बातचीत

मानव रचना यूनिवर्सिटी - फ़रीदाबाद
महिला वॉलिबॉल

BHP से साक्षात्कार में मानव रचना यूनिवर्सिटी की महिला वॉलीबॉल टीम के सदस्यों ने बिट्स. द्वारा आयोजित BOSM की तारीफ करते हुए कहा की उन्हें यहाँ अत्यंत आनंद आ रहा है। उन. सभी को यहाँ का माहौल काफी अच्छा लगा है तथा यहाँ की साफ़ सफाई और रख-रखाव से वे प्रसन्न हैं। टीम की एक सदस्य ने कहा की वह यहाँ दूसरी बार आयी हैं और पिछले वर्ष बिट्स आने के बाद से तोह उन्हें हर दिन यहाँ आने का मन करता है। इस वर्ष के BOSM के बारे में चर्चा करते हुए एक सदस्य ने कहा की इस बार पहले की तुलना से प्रतिद्वंद्विता बढ़ गयी है और इस बात से. सभी खुश हैं। बिट्स की प्रशंसा करते हुए उन्होनें यह भी कहा की उनमे से किसी को भी अभी. तक यहाँ कोई भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा है। अपनी टीम के अभ्यास के. बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया की कैसे BOSM के लिए उन सभी ने दिन रात एक करके. कड़ा परिश्रम किया है और साथ ही वे सभी स्वर्ण पदक जितने के लिए आशावादी हैं।

मानव रचना यूनिवर्सिटी - फ़रीदाबाद
पुरुष वॉलीबॉल और पुरुष क्रिकेट

BHP से साक्षात्कार करते हुए मानव रचना यूनिवर्सिटी से हिस्सा ले रहे खिलाड़ियों ने. बिट्स की अत्यंत प्रशंसा की तथा यहाँ के माहौल को काफ़ी प्रगतिशील और उल्लासमय बताया। उन्होंने यहाँ की खेल सुविधाओं और बिट्स के आतिथ्य की भी काफ़ी तारीफ़ की। टीम के दूसरे सदस्यों ने इंस्टिट्यूट की मेस और यहाँ के रहने के इंतज़ाम की भी कीर्ति गाई। BOSM में आकर सभी सदस्य अत्यंत खुश है और उन सभी ने यह भी कहा की वे इस प्रत्योगिता का हर साल इंतज़ार करते हैं। अपने मैच की तैयारी के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि BOSM के लिए वे एक महीने से लगातार कड़ा परिश्रम कर रहे थे और वे सभी आशावान हैं कि उनकी यह मेहनत ज़रूर रंग. लाएगी। पुरुष वॉलीबॉल के एक सदस्य ने अंत में यह कहा की अब तक वे 2 मैच जीत. चुकें हैं और आगे की चुनौतियों के लिए खड़े मस्तक के साथ डट कर खेलने को तैयार है।

3SISTERS ENERZAL NoticeBard EaseMyTrip Bharat Petroleum energising lives plum Body Lovin'

हिंदी प्रेस क्लब

हार्दिक

ऋत्विक, सर्वेश, आर्ची, निशिका, भव्य, देव

सर्वाक्ष, **ध्रुव**, अवि, वैष्णवी, अनुज, विदित, अमृत, मल्लिका, पुलकित, वल

हर्ष, मोक्ष, कृष, अभिन्नआशीष, विशेष, प्रिशा, कविश, कौस्तुभ, नमः, प्रीतवर्धन, रिया, एकांश, अनुष्का, केदार, दिव्यम, दिवाकर, भाविनी, राहुल, ऋषव, आदित्या

अर्नव, आदित्य, राघव, निहारिका, वंशिका, हविष्मा, अभय, जयंत, प्राची, प्रकृति, द्विति, श्रीनिधि